

पद ७३

(रागः अल्हैया बिलावल - तालः झंपा)

नमो पूर्ण सुखभरित चैतन्यधामा । सच्चिदानंद गुरु
सार्वभौमा ॥ध्रु॥ एक सद्वस्तु घन अविट अज निजरूप । अनृतमय
जगदखिल भावशून्य । सिद्ध सिद्धांतपर सूक्ष्मतर निर्मला ।
निष्कला स्वानुभव वेदमान्या ॥१॥ पंचभूत त्रिगुणरहित
गुणसाम्यसम । विषम अति शांति गुज निर्विकारा । योगिजन
साम्राज्यपट अतिमौनपद । भूत भवदृश्य संसारसारा ॥२॥ निश्चल
निरालंब निर्विकल्पाकाश । निगमनत नेति नेतीति शुद्धातिनित्य
नूतन निजानंद गुरु अवधूत । निरतिशय ज्ञानमार्ताण्ड बोधा ॥३॥